Q. No.कार्डिनल उपयोगिता (Cardinal Utility) तथा ऑर्डिनल उपयोगिता (Ordinal Utility) : विस्तृत अध्ययन

अर्थशास्त्र में उपयोगिता (Utility) का अर्थ उस संतुष्टि या आनंद से है जो किसी वस्तु या सेवा के उपभोग से उपभोक्ता को प्राप्त होती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं का उपभोग करता है। किसी वस्तु से प्राप्त संतुष्टि की मात्रा प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग हो सकती है। इसी संतुष्टि को समझाने के लिए अर्थशास्त्रियों ने उपयोगिता के दो प्रमुख सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं— कार्डिनल उपयोगिता सिद्धांत तथा ऑर्डिनल उपयोगिता सिद्धांत।

कार्डिनल उपयोगिता सिद्धांत यह मानता है कि उपयोगिता को संख्याओं में मापा जा सकता है, जबकि ऑर्डिनल उपयोगिता सिद्धांत के अनुसार उपयोगिता का मापन संभव नहीं है, बल्कि केवल विभिन्न वस्तुओं के प्रति उपभोक्ता की पसंद का क्रम निर्धारित किया जा सकता है। आधुनिक अर्थशास्त्र में ऑर्डिनल उपयोगिता सिद्धांत को अधिक वैज्ञानिक एवं यथार्थवादी माना जाता है।

कार्डिनल उपयोगिता (Cardinal Utility)

कार्डिनल उपयोगिता सिद्धांत को परिमाणात्मक उपयोगिता सिद्धांत (Quantitative Utility Theory) भी कहा जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार उपभोक्ता द्वारा प्राप्त संतुष्टि को संख्यात्मक रूप से मापा जा सकता है। उपयोगिता को मापने की काल्पनिक इकाई "यूटिल (Utils)" कहलाती है।

उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति को एक कप चाय पीने से 30 यूटिल्स तथा एक कप कॉफी पीने से 20 यूटिल्स की संतुष्टि प्राप्त होती है, तो कहा जाएगा कि चाय की उपयोगिता कॉफी से अधिक है।

इस सिद्धांत का प्रतिपादन अल्फ्रेड मार्शल, विलियम स्टेनली जेवन्स तथा कार्ल मेंगर ने किया। यह सिद्धांत सीमान्त उपयोगिता ह्रास के नियम पर आधारित है।

कार्डिनल उपयोगिता की प्रमुख मान्यताएँ

- उपयोगिता को यूटिल्स में मापा जा सकता है।
- धन की सीमान्त उपयोगिता स्थिर रहती है।
- उपभोक्ता तर्कसंगत व्यवहार करता है।
- उपभोक्ता का उद्देश्य अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना होता है।
- उपभोक्ता अपनी संतुष्टि को संख्यात्मक रूप में व्यक्त कर सकता है।

कार्डिनल उपयोगिता की विशेषताएँ

- उपयोगिता का संख्यात्मक मापन संभव माना जाता है।
- कुल उपयोगिता (Total Utility) एवं सीमान्त उपयोगिता (Marginal Utility) की अवधारणा पर आधारित है।
- उपभोक्ता संतुष्टि को संख्याओं में व्यक्त करता है।
- यह पारंपरिक उपभोक्ता व्यवहार सिद्धांत है।
- इसका उपयोग उपभोक्ता संतुलन की व्याख्या में किया जाता है।

कार्डिनल उपयोगिता की सीमाएँ

- संतुष्टि एक मानसिक अनुभूति है, जिसे संख्याओं में मापना कठिन है।
- अलग-अलग व्यक्तियों की संतुष्टि की तुलना संभव नहीं है।
- धन की सीमान्त उपयोगिता स्थिर नहीं रहती।
- यह सिद्धांत वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से पूर्णतः मेल नहीं खाता।
- आधुनिक अर्थशास्त्री इस सिद्धांत को कम व्यावहारिक मानते हैं।

ऑर्डिनल उपयोगिता (Ordinal Utility)

ऑर्डिनल उपयोगिता सिद्धांत को क्रमवाचक उपयोगिता सिद्धांत (Ranking Theory of Utility) भी कहा जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार उपयोगिता का संख्यात्मक मापन संभव नहीं है। उपभोक्ता केवल यह बता सकता है कि कौन-सी वस्तु उसे अधिक पसंद है और कौन-सी कम।

उदाहरण के लिए यदि कोई उपभोक्ता सेब, आम और केला खरीदना चाहता है, तो वह अपनी पसंद का क्रम इस प्रकार बता सकता है—

सेब > आम > केला

लेकिन वह यह नहीं बता सकता कि सेब से उसे 60 यूटिल्स तथा आम से 40 यूटिल्स की संतुष्टि प्राप्त हुई।

इस सिद्धांत का विकास जॉन हिक्स तथा आर. जी. डी. एलन ने किया। यह सिद्धांत उदासीनता वक्र विश्लेषण (Indifference Curve Analysis) पर आधारित है।

ऑर्डिनल उपयोगिता की प्रमुख मान्यताएँ

- उपभोक्ता तर्कसंगत होता है।
- उपभोक्ता अपनी पसंद का क्रम निर्धारित कर सकता है।
- पसंद में निरंतरता (Consistency) होती है।
- अधिक वस्तुओं का समूह कम वस्तुओं के समूह से अधिक पसंद किया जाता है।
- उपयोगिता का मापन नहीं किया जाता।

ऑर्डिनल उपयोगिता की विशेषताएँ

- उपयोगिता को मापा नहीं जाता।
- केवल पसंद का क्रम निर्धारित किया जाता है।
- यह आधुनिक उपभोक्ता व्यवहार सिद्धांत है।
- यह उदासीनता वक्र एवं बजट रेखा पर आधारित है।
- यह अधिक यथार्थवादी एवं वैज्ञानिक माना जाता है।

ऑर्डिनल उपयोगिता के लाभ

- वास्तविक जीवन के अधिक निकट है।
- मानसिक संतुष्टि को संख्याओं में मापने की आवश्यकता नहीं होती।
- उपभोक्ता व्यवहार को अधिक स्पष्ट रूप से समझाता है।
- आधुनिक अर्थशास्त्र में व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है।
- उपभोक्ता संतुलन की अधिक वैज्ञानिक व्याख्या करता है।

कार्डिनल उपयोगिता एवं ऑर्डिनल उपयोगिता में अंतर

कार्डिनल उपयोगिता

ऑर्डिनल उपयोगिता

- उपयोगिता को यूटिल्स में मापा जा सकता है।
- उपयोगिता को नहीं मापा जा सकता।
- संतुष्टि की मात्रा ज्ञात होती है।
- केवल पसंद का क्रम ज्ञात होता है।
- परंपरागत सिद्धांत है।
- आधुनिक सिद्धांत है।
- सीमान्त उपयोगिता ह्रास के नियम पर आधारित है।
- उदासीनता वक्र विश्लेषण पर आधारित है।
- धन की सीमान्त उपयोगिता स्थिर मानी जाती है।
- यह मान्यता आवश्यक नहीं है।
- कुल एवं सीमान्त उपयोगिता का प्रयोग होता है।
- उदासीनता वक्र एवं बजट रेखा का प्रयोग होता है।
- कम व्यावहारिक माना जाता है।
- अधिक व्यावहारिक एवं यथार्थवादी माना जाता है।
- इसका प्रतिपादन अल्फ्रेड मार्शल आदि ने किया।
- इसका विकास जॉन हिक्स एवं आर. जी. डी. एलन ने किया।

उदाहरण

मान लीजिए एक विद्यार्थी के सामने तीन फल हैं— सेब, आम और केला।

कार्डिनल उपयोगिता के अनुसार

सेब = 60 यूटिल्स

आम = 40 यूटिल्स

केला = 20 यूटिल्स

ऑर्डिनल उपयोगिता के अनुसार

प्रथम पसंद – सेब

द्वितीय पसंद – आम

तृतीय पसंद – केला

यहाँ कार्डिनल सिद्धांत संतुष्टि की मात्रा बताता है, जबकि ऑर्डिनल सिद्धांत केवल पसंद का क्रम बताता है।

निष्कर्ष

कार्डिनल उपयोगिता और ऑर्डिनल उपयोगिता दोनों ही उपभोक्ता व्यवहार के अध्ययन में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं। कार्डिनल उपयोगिता सिद्धांत उपयोगिता के संख्यात्मक मापन पर आधारित है, जबकि ऑर्डिनल उपयोगिता सिद्धांत पसंद के क्रम पर आधारित है। आधुनिक अर्थशास्त्र में ऑर्डिनल उपयोगिता सिद्धांत को अधिक महत्व दिया जाता है क्योंकि यह वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के अधिक निकट है और उपभोक्ता के व्यवहार की अधिक सटीक व्याख्या करता है।